Literacy for a Billion

Movie: Chor Machaye Shor (1974)
Year: 1974

Song: Ghungru Ki Tarah
Lyricist: Ravindra Jain

घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं
घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं

कभी इस पग में
कभी उस पग में
बँधता ही रहा हुँ मैं
घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं

कभी टूट गया
कभी तोड़ा गया
सौ बार मुझे
फिर जोड़ा गया

कभी टूट गया
कभी तोड़ा गया
सौ बार मुझे
फिर जोड़ा गया

यूँ ही लुट-लुट के
और मिट-मिट के
बनताही रहा हुँ मैं

घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं

मैं करता रहा औरों की कही
मेरी बात मेरे मन ही में रही
मैं करता रहा औरों की कही
मेरी बात मेरे मन ही में रही
कभी मंदिर में
कभी महफिल में
सजता ही रहा हुँ मैं

घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं
घूँघरू की तरह
बजता ही रहा हुँ मैं
बजता ही रहा हुँ मैं

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.